

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 11, ज्ञानोदय

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

मुझे थोड़ी-बहुत भक्तिपूर्ण बातें पढ़ना पसंद है, लेकिन हम पिछले कुछ शुक्रवारों से एक साथ नहीं रहे हैं, सिवाय पाठ और बाकी सब पर चर्चा करने के, इसलिए हम वास्तव में पढ़ा नहीं रहे हैं। और मैं आपसे ईमानदारी से कहना भूल गया कि मैंने जॉन कैल्विन के अपने पसंदीदा अंशों में से एक पढ़ा है, इसलिए मुझे याद नहीं है कि मैंने इसे पढ़ा या नहीं। इसलिए, थोड़ी भक्तिपूर्ण सोच के लिए, कुछ चीजों के माध्यम से, मैं आज सुबह कैल्विन के संस्थानों की शुरुआत से पढ़ रहा हूँ, पुस्तक 1, अध्याय 1, और मुझे वह तरीका पसंद है जिससे वह अपने संस्थानों की शुरुआत करते हैं।

वह कहते हैं कि हमारे पास जो भी ज्ञान है, यानी सच्चा और ठोस ज्ञान, उसके दो भाग हैं: परमेश्वर का ज्ञान और खुद का ज्ञान। लेकिन जब हम कई बंधनों से जुड़े होते हैं, जिनमें से एक बंधन दूसरे बंधन से पहले आता है और दूसरे बंधन को जन्म देता है, तो इसे पहचानना आसान नहीं होता। सबसे पहले, कोई भी व्यक्ति अपने आप को बिना तुरंत अपने विचारों को परमेश्वर के चिंतन में बदले नहीं देख सकता, जिसमें वह रहता है और चलता है, प्रेरितों के काम 17:28।

क्योंकि यह स्पष्ट है कि हमें जो महान उपहार मिले हैं, वे शायद ही हमसे प्राप्त हुए हों। वास्तव में, हमारा अस्तित्व एक ईश्वर में ही निहित है। फिर, स्वर्ग से हम पर ओस की तरह बरसने वाले इन लाभों से, हम झरने की तरह बहते हैं।

वास्तव में, हमारी गरीबी ही ईश्वर में निहित लाभों की अनंतता को बेहतर ढंग से प्रकट करती है। पहले मनुष्य के विद्रोह ने हमें जिस दयनीय विनाश में डाल दिया, वह हमें विशेष रूप से ऊपर की ओर देखने के लिए मजबूर करता है। इस प्रकार, न केवल हम उपवास और भूख में, उससे वह प्राप्त करेंगे जिसकी हमें कमी है, बल्कि भय से जागृत होकर, हम विनम्रता सीखेंगे।

चूँकि मनुष्य में दुखों की एक वास्तविक दुनिया पाई जाती है, और हम इस प्रकार ईश्वरीय वस्त्र से वंचित हो जाते हैं, हमारी शर्मनाक नग्नता बदनामी के एक विशाल भंडार को उजागर करती है। हममें से प्रत्येक को तब अपने स्वयं के दुख की चेतना से इतना डंक मारना चाहिए कि कम से कम ईश्वर के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त हो सके। इस प्रकार, अपनी स्वयं की अज्ञानता, घमंड, गरीबी, दुर्बलता और, इससे भी अधिक, भ्रष्टता और भ्रष्टाचार की भावना से, हम पहचानते हैं कि ज्ञान का सच्चा प्रकाश, अच्छा गुण, हर अच्छाई की पूर्ण प्रचुरता और धार्मिकता की पवित्रता केवल भगवान में ही निहित है।

इस हद तक, हम अपनी खुद की बुराइयों से प्रेरित होकर ईश्वर की अच्छी चीजों पर विचार करते हैं, और हम खुद से नाराज़ होने से पहले गंभीरता से उसकी आकांक्षा नहीं कर सकते। पूरी दुनिया में कौन ऐसा इंसान है जो खुशी-खुशी वैसा ही नहीं रहना चाहेगा जैसा वह है? कौन सा इंसान तब तक वैसा नहीं रहता जैसा वह है जब तक वह खुद को नहीं जानता, यानी अपनी खुद

की खूबियों से संतुष्ट रहता है और अपने दुखों से अनजान या बेखबर रहता है? तदनुसार, खुद का ज्ञान न केवल हमें ईश्वर की तलाश करने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि यह हमें ईश्वर को खोजने के लिए हाथ पकड़कर ले जाता है। इसलिए, संस्थाओं की शुरुआत, ईश्वर को जानना और खुद को जानना, और वे कितने अभिन्न रूप से संबंधित हैं, वास्तव में शुरुआत करने का एक सुंदर तरीका है।

तो इस तरह से वह शुरू करता है। खैर, यह उसके लिए बस एक छोटी सी भक्ति है। हम जा रहे हैं, हम, मुझे नहीं पता कि हम इस व्याख्यान को समाप्त करेंगे या नहीं, हम कर सकते हैं, लेकिन चलो बस खुद को याद दिलाते हैं कि हम यहाँ कहाँ हैं, व्याख्यान 5, पाठ्यक्रम के पृष्ठ 13 पर।

इस व्याख्यान में हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं, और हम इस व्याख्यान को प्रबुद्धता के युग का धर्मशास्त्र कह रहे हैं, और इस व्याख्यान में हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं वह यह देखना है कि चर्च, संगठित ईसाई धर्म, शास्त्रों, मसीह में ईश्वर के रहस्योद्घाटन, और इसी तरह की अन्य बातों के प्रति वास्तविक प्रतिक्रिया कैसे हुई, लगभग एक तरह की प्रतिक्रिया के रूप में, जैसे कि आप प्रबुद्धता के इस युग में आते हैं। फिर, हमने चार स्थानों पर जाने का फैसला किया: इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी और अमेरिका। हम उस तरह की प्रतिक्रिया के संबंध में उन चार स्थानों के बारे में बात करेंगे। ठीक है, खुद को याद दिलाएं कि इंग्लैंड में, ईसाई धर्म के प्रति प्रतिक्रिया एक तरह से काफी संतुलित थी।

यह वास्तव में बहुत हिंसक नहीं था। यह देववाद था। देववाद एक दर्शन था, और यह एकेश्वरवादी दर्शन था कि ईश्वर ऊपर है, हम नीचे हैं, और सद्गुणी जीवन जीना एक अच्छे ईसाई की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति है, एक अर्थ में।

यह अंततः यूनिटेरियनवाद में विकसित होता है। बहुत ही संतुलित प्रतिक्रिया। अगला देश निश्चित रूप से फ्रांस था, और हमने चर्च के प्रति फ्रांसीसी प्रतिक्रिया की एक तरह की अभिव्यक्ति के रूप में प्रकृतिवाद का उल्लेख किया, और चर्च और ईसाई धर्म के प्रति फ्रांसीसी प्रतिक्रिया बहुत हिंसक थी।

फ्रांसीसी क्रांति इसका एक अच्छा उदाहरण है। अंग्रेजी प्रतिक्रिया की तुलना में बहुत कम मापा गया। हमने उल्लेख किया कि उस दुनिया में कुछ लोग थे जिन्होंने वास्तव में ईसाई धर्म के प्रति इस प्रतिक्रिया को आवाज़ दी थी।

तो, हमने स्पिनोज़ा का उल्लेख किया, हमने वोल्टेयर का उल्लेख किया, और फिर हमने जिस तीसरे व्यक्ति का उल्लेख किया वह जीन-जैक्स रूसो थे। और हमने कहा कि हालाँकि उनका जन्म स्विट्ज़रलैंड में हुआ था, लेकिन वे पेरिस चले गए, इसलिए हमने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में इस्तेमाल किया, उन्होंने अपना बहुत सारा लेखन और चिंतन पेरिस में किया, इसलिए हमने उन्हें फ्रांसीसी प्रतिक्रिया के लिए एक तरह के प्राकृतिक मॉडल के रूप में इस्तेमाल किया। ठीक है, हालाँकि, वे खुद काफी संतुलित हैं, और हमने कहा कि हम रूसो के बारे में चार बातें कहने जा रहे हैं।

मुझे लगता है कि हमने पहले दो का जिक्र किया, है न? क्या हमने रूसो के बारे में दो बातें बताई? क्या हमने तर्कसंगतता के बजाय भावना के बारे में बात की? भावना ही वह पहचान है जिसका हमने जिक्र किया, ठीक है? और फिर क्या हमने प्रकृति की ओर लौटने, कुलीन जंगली छवि के बारे में जिक्र किया? औद्योगिक क्रांति ने आप पर जो भी अत्याचार किए हैं, उनसे दूर होने के लिए आपको उनसे दूर होने की ज़रूरत है, और आपको उनसे दूर रहने की ज़रूरत है। और अगर आप वाकई यह समझना चाहते हैं कि आप क्या हैं, तो आपको स्वार्थी जीवन नहीं जीना चाहिए, आपको अभावों का जीवन नहीं जीना चाहिए, आपको ईर्ष्या का जीवन नहीं जीना चाहिए और इसी तरह, आपको उससे ज़्यादा सद्गुणी जीवन जीना चाहिए, आप जानते हैं? और कुलीन जंगली हमें वे सद्गुण सिखा सकते हैं, मुझे लगता है कि हमने इसका जिक्र किया है। क्या हम महत्व के मामले में तीसरे नंबर पर पहुँच गए, नहीं, ठीक है ?

तो, मेरे पास रूसो के बारे में कहने के लिए दो और बातें हैं जो ज्ञानोदय के युग को रेखांकित करने के मामले में सहायक हैं, लेकिन ये दोनों तब भी सहायक हैं जब हम अमेरिका आते हैं। तो, ठीक है, नंबर तीन यह है कि एक जगह है जहाँ रूसो के लिए तर्क बहुत महत्वपूर्ण है। तो, वह इस अर्थ में ज्ञानोदय का एक उत्पाद है।

तो, एक जगह है जहाँ तर्क बहुत महत्वपूर्ण है। और वह जगह जहाँ यह महत्वपूर्ण है वह है सरकार का गठन। सरकार के गठन में, विवेकशील लोग उस सरकार का गठन और आकार देने में सक्षम होते हैं जो वे चाहते हैं या होनी चाहिए।

तो, इस तीसरे बिंदु के अंतर्गत, अब रूसो की तिथियों पर ध्यान दें। यदि आप चाहें, तो यहाँ सूची में सबसे ऊपर 1712 से 1728 तक की तिथियाँ हैं। तो, 18वीं शताब्दी के दौरान, रूसो ने राजाओं के दैवीय अधिकार को चुनौती दी थी। राजाओं का कोई दैवीय अधिकार नहीं है।

सरकारें दैवीय अधिकार से नहीं बनतीं। सरकारें लोगों की उचित इच्छा से बनती हैं। और सरकार के गठन में लोगों की राय होनी चाहिए।

तो यह फ्रांसीसी राजशाही के लिए एक वास्तविक, स्पष्ट रूप से, एक बहुत ही वास्तविक चुनौती बन जाती है, ठीक उसी समय जब वह पेरिस में पढ़ा रहे हैं। और इस तरह की कुछ सोच, निश्चित रूप से, फ्रांसीसी क्रांति की ओर ले जाने वाली है, जो कि रूसो की अपेक्षा से कहीं अधिक हिंसक हो गई। लेकिन किसी भी मामले में, वह राजाओं के दैवीय अधिकार को चुनौती देता है।

अब, सरकारें लोगों की इच्छा से, लोगों की उचित इच्छा से बनती हैं, और सरकारें आम लोगों द्वारा बनाई जाती हैं। जब हम सरकार के गठन के बारे में अमेरिका की समझ पर आते हैं तो यह परिचित लगने वाला है। इसलिए रूसो बहुत, बहुत प्रभावशाली होने जा रहा है। एक प्रबुद्ध विचारक के रूप में, वह अमेरिकी सोच में बहुत प्रभावशाली होने जा रहा है।

इसलिए जब हम इस पर आते हैं तो हम इस तरह के संबंध पर नज़र रखना चाहते हैं। ठीक है, रूसो के साथ चौथा नंबर, जैसा कि बहुत से लेखकों ने कहा है, रूसो ने एक नागरिक धर्म की स्थापना में मदद की। यह जरूरी नहीं कि चर्च का धर्म था।

यह कोई धर्म नहीं था, निश्चित रूप से रूढ़िवादी ईसाई धर्म नहीं था, लेकिन यह एक नागरिक धर्म था। अब, उस नागरिक धर्म ने क्या किया, और उस नागरिक धर्म की विशेषताएँ क्या थीं? खैर, एक विशेषता ईश्वर में विश्वास, सर्वोच्च सत्ता में विश्वास थी। तो यह नागरिक धर्म ईश्वर, सर्वोच्च सत्ता में विश्वास करता था।

यह कोई ईश्वरविहीन धर्म या ईश्वरविहीन समाज नहीं था जिसकी वह तलाश कर रहे थे। तो यह नंबर एक है। तो नागरिक धर्म, नंबर एक, ईश्वर।

दूसरा नंबर व्यक्तिगत अमरता में विश्वास है। ऐसा है, क्योंकि यह नागरिक धर्म किसी तरह के पुरस्कार और दंड में विश्वास करता है क्योंकि उनका तर्क है कि इस जीवन में इसका ध्यान नहीं रखा जाता है। बहुत सारे अच्छे लोग हैं जो कष्ट सहते हैं और उन्हें कोई पुरस्कार नहीं मिलता।

बहुत से बुरे लोग हैं जो बुरे काम करते हैं और उन्हें कभी सज़ा नहीं मिलती। इसलिए किसी तरह की व्यक्तिगत अमरता की भावना होती है जहाँ किसी तरह के जीवन के बाद पुरस्कार और दंड मिलते हैं। तो नागरिक धर्म के संदर्भ में यह नंबर दो है।

ठीक है, तीसरा नंबर, और इस जीवन में अच्छा जीवन, सदाचारी जीवन जीने का महत्व। नागरिक धर्म में, हम चाहते हैं कि लोग इस दुनिया में अच्छा जीवन, नैतिक जीवन और सदाचारी जीवन जियें। चौथा नंबर सहनशीलता का सिद्धांत था।

सहनशीलता का सिद्धांत दूसरे लोगों, दूसरे दृष्टिकोणों, दूसरे धर्मों आदि को सहन करना है। लेकिन सहनशीलता का सिद्धांत निश्चित रूप से एक नागरिक धर्म का हिस्सा है। अब फिर से, किसी संगठित ईसाई संप्रदाय का हिस्सा नहीं है, किसी संगठित ईसाई चर्च या ऐसा कुछ का हिस्सा नहीं है।

लेकिन निश्चित रूप से नागरिक समाज के ढांचे में। अब, इस तरह की बातें अमेरिका में भी सच होंगी क्योंकि लोग यहाँ रूसो को पढ़ रहे हैं; नागरिक धर्म में इस तरह की रुचि को अमेरिकी धरती पर भी जड़ जमानी होगी। ठीक है, तो यह नंबर सी है। यह आपकी रूपरेखा में सी है, लेकिन हमने ए को परिचय दिया, फिर हमने बी को इंग्लैंड दिया, जो कि देववाद की मापी हुई प्रतिक्रिया थी, और सी को फ्रांस में ज्ञानोदय की प्रतिक्रिया दी, जो कि प्रकृतिवाद था लेकिन बहुत कम प्रतिबंधों के साथ।

इस बारे में कोई सवाल? फिर हम जर्मनी और अमेरिका जाएंगे। ठीक है, चलो फिर डी पर चलते हैं, चलो जर्मनी चलते हैं। इस समय जर्मनी के लिए मैं जो शब्द इस्तेमाल करूंगा वह है बुद्धिवाद।

आइए हम अपनी श्रेणियों पर वापस जाएं, लेकिन निश्चित रूप से तर्कवाद, इसमें कोई संदेह नहीं है। जर्मनी में तर्क वास्तविकता को समझने के लिए एक तरह से कसौटी बन गया। इसलिए, यदि आप अपने आस-पास की दुनिया को समझना चाहते हैं, जिसमें वैज्ञानिक दुनिया भी शामिल है, तो हमारे पास एक ऐसा दिन है जिसमें हम गॉर्डन में विज्ञान का जन्म मनाते हैं।

यदि आप वैज्ञानिक दुनिया को समझना चाहते हैं, तो आपको अपने आस-पास की दुनिया को समझने के लिए तर्क का इस्तेमाल करना होगा। तो, एक बाहरी दुनिया है जिसे तर्क से जाना जा सकता है, और बहुत से लोग सोचते हैं कि केवल तर्क से ही जाना जा सकता है। जर्मनी के बारे में एक और बात यह है कि जर्मनी में आपको जो मिलता है वह यह विश्वास है कि ब्रह्मांड में एक व्यवस्था है।

ठीक है, और हमारा काम क्या है, मनुष्य का काम क्या है, उस व्यवस्था का दोहन करना है। ब्रह्मांड में एक व्यवस्था है, आइए उस व्यवस्था का दोहन करें, आइए उस व्यवस्था का उपयोग करें, और आइए उस व्यवस्था के उपयोग को अपने जीवन को परिभाषित करने दें। इसलिए, वैज्ञानिक जीवन सहित जीवन को परिभाषित करने के लिए व्यवस्था का तर्कसंगत उपयोग जर्मनी में बहुत महत्वपूर्ण हो गया है, और जर्मन विश्वविद्यालयों के उदय के साथ, तर्कवाद का वह प्रकार का दर्शन काफी प्रभावी हो गया है।

अब हम इसे भी देखेंगे, जैसा कि हमने दूसरे दिन बताया था, लेकिन आप इसे कला, संगीत और ललित कलाओं में भी देखेंगे। आप कलात्मक अभिव्यक्ति के संदर्भ में एक तरह का तर्कवाद देखेंगे, चाहे वह पेंटिंग हो या संगीत, और जैसा कि मैं कहता हूँ, अगर आपको हैंडेल-हेडन पसंद है, अगर आप हैंडेल-हेडन समाज से जुड़ना चाहते हैं, मेरी पत्नी और मैं उस समाज से काफी सालों से जुड़े हुए हैं, अगर आपको उस तरह का संगीत पसंद है, वह 18वीं सदी का संगीत, तो आप इस तरह की चीज़ों को समझेंगे। यह बहुत तर्कसंगत, बहुत तार्किक, बहुत व्यवस्थित लगता है।

संगीत बहुत व्यवस्थित है, है न? इसलिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है। ठीक है, अब, यह जर्मनी में कैसे काम करता है? यह धर्म में कैसे काम करता है? यह हमारा सबसे महत्वपूर्ण है, यही वह है जिसमें हमारी रुचि है। यह तर्कवाद जर्मनी में धार्मिक रूप से कैसे काम करता है? खैर, मैं दो चीज़ों का उल्लेख करने जा रहा हूँ: यह धर्म में कैसे काम करता है।

सबसे पहले, मैं बस यह बताना चाहता हूँ कि यह सामान्य रूप से धर्म में कैसे काम करता है। यह धार्मिक दर्शन, इस तर्कवाद में कैसे काम करता है? हर चीज़ को व्यवस्थित किया जाना चाहिए; हर चीज़ को तर्कसंगत रूप से जानना चाहिए ताकि उसे सत्य और सार्थक माना जा सके, इत्यादि। खैर, वास्तव में, सामान्य रूप से धर्म के संदर्भ में, यह बाइबल, चर्च, ईसाई इतिहास की बहुत गंभीर आलोचना के साथ काम करता है।

इसलिए, यदि आप ऐसा नहीं कर सकते, यदि आप धर्म के बारे में सोच रहे हैं, कि धर्म को केवल तर्क से, केवल तर्क से, केवल तर्कसंगतता से मापा जाना चाहिए, तो बाइबल, चर्च और बहुत सारी ईसाई धर्म दरवाज़े से बाहर चले गए। यहीं से आपको वह चीज़ मिलती है जिसे हम बाइबिल की आलोचना कहते हैं, वास्तव में गंभीर, कठोर बाइबिल आलोचना, जो 18वीं शताब्दी में जर्मनी और 19वीं शताब्दी में आई जब लोग बाइबिल, ईसाई धर्म, चर्च, संगठित धर्म और इसी तरह की अन्य चीज़ों के बारे में बहुत आलोचनात्मक थे। यह इतनी चरम सीमा पर पहुंच गया कि जर्मनी में, लोग यीशु की ऐतिहासिकता पर भी संदेह करने लगे।

इसलिए, उन्होंने यीशु की ऐतिहासिकता पर संदेह किया। उन्होंने कहा कि यीशु एक मनगढ़ंत व्यक्ति थे, सुसमाचार बहुत बाद में लिखे गए थे, उन्होंने यीशु को एक आदर्श इंसान के रूप में पेश किया, लेकिन नासरत का कोई यीशु कभी नहीं था, जो नासरत में रहता था, गलील और यहूदिया में सेवा करता था, रोमन क्रूस पर मर गया, पुनर्जीवित हुआ और इसी तरह की अन्य बातें। उन्होंने इन सभी बातों को नकार दिया। इसलिए पहला परिणाम वास्तव में एक बहुत ही कट्टरपंथी बाइबिल आलोचना है जो अब जर्मनी में सामने आती है।

और वास्तव में, यह चर्च और चर्च की सोच को चुनौती देता है, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, दूसरा परिणाम लूथरनवाद का पुनर्निर्देशन था, क्योंकि लूथरनवाद मूल रूप से जर्मनी में राज्य चर्च है। इसलिए, 18वीं शताब्दी में जर्मनी में लूथरनवाद को पुनर्निर्देशित किया गया।

अब, इसे कैसे पुनर्निर्देशित किया जाता है? खैर, मुझे लगता है कि लूथर के बारे में हम जो एक बात भूल जाते हैं, वह है लूथर के बारे में एक मिनट के लिए वापस जाना। लूथर एक बहुत ही, आप जानते हैं, जीवन से बड़ा व्यक्ति था, लेकिन वह बहुत रचनात्मक, कल्पनाशील और सृजनशील था। वह ऐसा चर्च नहीं चाहता था जहाँ सिर्फ दयालु लोग रविवार को बेंच पर बैठें और कुछ भी न सोचें; वह सिर्फ धर्मोपदेश और अन्य बातें सुनें।

लूथर के बारे में रचनात्मकता थी, लूथर के बारे में कल्पना थी, सुसमाचार और सुसमाचार की सच्चाइयों के लिए जुनून था, और यह सब। तो आपके पास एक बड़ा-से-बड़ा व्यक्तित्व था, और लूथर के बाद पहली पीढ़ी में लूथरनवाद ने उन प्रकार की विशेषताओं को अपनाया। लेकिन एक बार जब आप 18वीं सदी में पहुँच जाते हैं, और यहाँ हमारे शब्द सबसे ऊपर है, विद्वत्तावाद, एक बार जब आप 18वीं सदी में पहुँच जाते हैं, तो 18वीं सदी में जो विकसित हुआ वह लूथरन विद्वत्तावाद था।

लूथरन चर्च में जो विकसित हुआ वह एक बहुत ही मृत, विद्वत्तापूर्ण, तर्कसंगत प्रकार का धर्म था, और आम लोग रविवार की सुबह अपने लूथरन चर्चों में जा रहे थे, और वे सुन रहे थे। मूल रूप से, उन्होंने ग्रंथ, धर्मशास्त्रीय ग्रंथ सुने। वे उपदेशों के माध्यम से बाइबल को जीवंत होते नहीं सुन रहे थे जैसा कि लूथर के माध्यम से हुआ था। इसलिए, लूथरनवाद में एक मृतता थी, जो 17वीं और 18वीं शताब्दी में स्थापित हुई।

अब, इस दूसरे पर संक्षेप में बात करें, तो पहला सामान्य रूप से धर्म था, दूसरा विशेष रूप से लूथरनवाद के साथ है, लेकिन एक आंदोलन होने जा रहा है जो इस पर विचार करेगा, लूथरन का एक समूह होने जा रहा है, वे इस पर विचार करेंगे और कहेंगे, क्या चर्च का उद्देश्य यही है? क्या यह मृत है, शैक्षणिक प्रकार का? नहीं, वे कहेंगे नहीं, यह वह नहीं है जो लूथरनवाद का कभी उद्देश्य था, और इसलिए वे लूथरनवाद को फिर से जीवित करने का प्रयास करने जा रहे हैं, और उस आंदोलन को पीटिज्म कहा जाता है। मेरी सूची में यह नहीं है। हम व्याख्यान देने जा रहे हैं। वास्तव में, यह आपके पाठ्यक्रम में है क्योंकि अगले व्याख्यान में हम जिस पहले समूह के बारे में बात करने जा रहे हैं वह पीटिस्ट है, लेकिन उस आंदोलन को पीटिज्म कहा जाता है, लूथरन चर्च को एक बार फिर से जीवित करना जो इसका उद्देश्य था। ठीक है, तो जर्मनी, जर्मनी में इस तरह का तर्कवाद।

अब, मैं अमेरिका जाने से पहले बस एक मिनट के लिए यहीं रुकता हूँ। हमारे पास इंग्लैंड है, हमारे पास फ्रांस है, हमारे पास जर्मनी है, जो ज्ञानोदय के युग में प्रतिक्रिया करते हैं, लेकिन चर्च और ईसाई धर्म का जवाब देते हैं और कभी-कभी चर्च, ईसाई धर्म, मसीह और इसी तरह की अन्य बातों के बारे में बहुत कठोर आलोचना करते हैं, लेकिन इन तीनों के बारे में कुछ भी, हम बस एक मिनट में अमेरिका जाने वाले हैं। ठीक है, चलो इन तटों पर आते हैं, चलो अमेरिका आते हैं और देखते हैं कि ज्ञानोदय के युग के संदर्भ में अमेरिका में हमारे पास क्या है।

ठीक है, ऐसा करने से पहले, मुझे बस इतना कहना है कि, ओह, मुझे लगता है कि हमारे पास जो भी शब्द हैं, वे वहाँ हैं, इसलिए ऐसा करने से पहले, मुझे बस इतना कहना है कि मुझे गॉर्डन कॉलेज में अपना काम कितना पसंद है। मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि गॉर्डन में अपने 41वें वर्ष में यहाँ आकर मैं कितना खुश हूँ। इसलिए, मैं अमेरिका में ज्ञानोदय के बारे में कुछ ऐसी बातें कहने जा रहा हूँ जिनसे आप सभी सहमत नहीं हो सकते हैं, और मैं इसे समझूंगा।

मैं इस बात से बहुत सहानुभूति रखता हूँ। मैं अमेरिका में ज्ञानोदय को जिस तरह से समझता हूँ, उसे समझाने की कोशिश करूँगा। तो, क्या हम इससे सहमत हैं? क्या मैं ऐसा कर सकता हूँ? अगर मैं ऐसा करूँ तो आपको कोई आपत्ति नहीं है, है न? आइए देखें कि इस बारे में कुछ मतभेद हैं या नहीं।

चलो देखते हैं कि क्या आप इसे ठीक से नहीं समझते हैं। मैं आपको कुछ बेचने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, लेकिन मैं इसे स्पष्ट करने की कोशिश कर रहा हूँ। इसलिए मुझे ऐसा करना होगा, आप जानते हैं, मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि आप इसे जानें। मैं बस इसे स्पष्ट करने की कोशिश कर रहा हूँ।

क्या आप इससे सहमत हैं? तो, चलिए, देखते हैं कि अमेरिका में क्या हुआ। मैं संस्थापक पिताओं के बारे में बात करके शुरू करता हूँ, मूल रूप से संस्थापक पिता, और उनके द्वारा, मैं जॉर्ज वाशिंगटन, थॉमस जेफरसन, बेंजामिन फ्रैंकलिन और ऐसे लोगों के बारे में सोच रहा हूँ। ठीक है, तो यहाँ मेरा आधार है, और फिर मैं इसे थोड़ा विकसित करूँगा।

अमेरिका में, अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में, एक व्यापक देववाद था। अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में इस बारे में कोई संदेह नहीं है। देववाद इंग्लैंड से आया था और वास्तव में आकार ले चुका था और अमेरिकी सार्वजनिक जीवन, विशेष रूप से अमेरिकी बौद्धिक जीवन पर अपनी पकड़ बना चुका था।

विश्वविद्यालयों का जीवन, कई लोगों का जीवन, कुछ चर्च, इत्यादि। अब, यह अंततः यूनिटेरियनवाद में विकसित होने जा रहा है, लेकिन अमेरिका में पहला यूनिटेरियन चर्च क्रांति के बाद ही बना था। इसलिए, पहला यूनिटेरियन चर्च 1785 तक नहीं बना था।

इसलिए, हमारे पास अमेरिकी क्रांति के बाद, वास्तव में उस संप्रदायिक रूप में विकसित होने वाला देववाद नहीं है, लेकिन हमारे पास अमेरिकी क्रांति के समय के दौरान इसका आकार

बनता हुआ है। इसलिए, यहाँ देववाद वास्तव में, वास्तव में, वास्तव में महत्वपूर्ण है। ठीक है, तो यहाँ मेरी थीसिस है।

मेरा सिद्धांत यह है कि संस्थापक पिता मूल रूप से प्रबुद्ध देववादी थे। उन्होंने ज्ञानोदय के सिद्धांतों को अपनाया और अमेरिका की स्थापना में, उन्होंने उन ज्ञानोदय के सिद्धांतों का अच्छे से इस्तेमाल किया, जो उनके अनुसार यहाँ चल रहा था। तो, इसका क्या मतलब है? मैं उन संस्थापक पिताओं को नहीं देखता जिनका मैंने उल्लेख किया है, और मैं उन्हें उग्र इंजीलवादियों के रूप में नहीं देखता।

मैं उन्हें ऐसे लोगों के रूप में नहीं देखता जो रूढ़िवादी इंजील ईसाई धर्म, बाइबिल ईसाई धर्म कहलाने वाले लोगों के प्रति प्रतिबद्ध हैं। आप में से कुछ लोग उन्हें देख सकते हैं, और उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर करने वाले कुछ लोग ऐसे थे, जो ऐसे थे, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन जिन लोगों ने अमेरिकी सार्वजनिक जीवन और कुछ हद तक अमेरिकी धार्मिक जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव डाला, संस्थापक पिताओं के संदर्भ में, मैं उन्हें प्रबुद्ध देववादी के रूप में देखूंगा।

ठीक है, तो मैं इसका एक उदाहरण थॉमस जेफरसन को ही लूंगा। थॉमस जेफरसन ने जेफरसन नामक पुस्तक विकसित की, जिसे जेफरसन बाइबिल के नाम से जाना गया। मुझे नहीं पता कि आपने कभी जेफरसन बाइबिल देखी है या नहीं, लेकिन जेफरसन बाइबिल, जेफरसन बाइबिल में थॉमस जेफरसन ने जो किया, वह यह था कि उन्होंने यीशु के सभी चमत्कारों को हटा दिया क्योंकि उन्हें नहीं लगता था कि यीशु के चमत्कार कहानी के अनुसार सच थे, कि ये यीशु को दिव्य दिखाने के लिए बनाए गए थे, जो कि जेफरसन के अनुसार, निश्चित रूप से वे नहीं थे।

इसलिए, जेफरसन बाइबिल सभी चमत्कारों से छुटकारा पाती है और यीशु के साथ समाप्त होती है, जिसके बारे में वह सोचता है कि वह अनुसरण करने के लिए एक अच्छा व्यक्ति है। हम एक नैतिक व्यक्ति बनना चाहते हैं जैसे यीशु एक नैतिक व्यक्ति थे, और हम आनंद के अनुसार जीना चाहते हैं। खैर, आप नए नियम के चमत्कारों को नहीं काट सकते हैं और फिर भी सुसमाचार के यीशु को रख सकते हैं।

मेरा मतलब है, आप ऐसा नहीं कर सकते और सुसमाचार की कहानी नहीं रख सकते क्योंकि वे सुसमाचार की कहानी और राज्य की कहानी के लिए आवश्यक हैं। जेफरसन ने यही किया। इसलिए मैं देखूंगा कि वह ऐसा करके एक तरह की ज्ञानोदय की तरह की ईश्वरवादी, एक तरह की यूनिटेरियन चीज कर रहा है।

तो, मैं कहूंगा कि इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अमेरिका की स्थापना ज्ञानोदय के सिद्धांतों पर हुई थी, न कि बाइबिल के सिद्धांतों पर। मैं यहाँ अमेरिका की वास्तविक स्थापना के बारे में बात कर रहा हूँ। मैं यह नहीं कहूंगा कि इसकी स्थापना बाइबिल के सिद्धांतों पर हुई थी, बल्कि ज्ञानोदय के सिद्धांतों पर हुई थी।

मैं स्वतंत्रता की घोषणा से इसका एक उदाहरण देता हूँ। ठीक है, आप भी इसे जानते हैं और मैं भी। स्वतंत्रता की घोषणा कहती है कि हम इन सत्यों को क्या मानते हैं? हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं।

हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं। दूसरे शब्दों में, स्वतंत्रता की घोषणा यह नहीं कहती कि हम इन सत्यों को बाइबल से मानते हैं। वे यहाँ एक दार्शनिक प्रकार के स्वयंसिद्ध, एक प्रकार के सामान्य ज्ञान यथार्थवाद का उपयोग कर रहे हैं।

हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं: कि सभी मनुष्य समान बनाए गए हैं, कि उन्हें उनके निर्माता द्वारा कुछ अविभाज्य अधिकार दिए गए हैं। इनमें जीवन, स्वतंत्रता और खुशी की खोज शामिल है। बेशक, देववादियों ने सृष्टिकर्ता ईश्वर में विश्वास किया, लेकिन उन्होंने ईश्वर को उद्धारक के रूप में नहीं देखा।

वे ईश्वर को उद्धारकर्ता के रूप में नहीं देखते थे। इसलिए, यह नहीं कहा गया कि हम इन सत्यों को स्वयं-प्रमाणित मानते हैं। हम इन सत्यों को स्वयं-प्रमाणित मानते हैं।

उन्हें उनके उद्धारकर्ता परमेश्वर, उनके उद्धारक द्वारा उपहार दिया गया था। ऐसा नहीं कहा गया है। यह कहा गया है कि हमें उनके निर्माता द्वारा उपहार दिया गया है।

वह भाषा बहुत ही ईश्वरवादी भाषा है। स्व-स्पष्ट सत्य, सृष्टिकर्ता ईश्वर। इसलिए, मैं यह तर्क देता हूँ कि अमेरिका में जो हुआ, धार्मिक और राजनीतिक रूप से जो हुआ, वह एक ऐसा ईश्वरवाद था जो अमेरिका में आया और मैं कहूँगा कि अमेरिकी सार्वजनिक जीवन और अमेरिकी धार्मिक जीवन के लिए दार्शनिक आधार प्रदान करने में मदद की, खासकर जब कुछ अमेरिकी एकेश्वरवाद में चले गए।

अब, मैं यहाँ वापस आता हूँ। कभी-कभी अमेरिका में कुछ लेखक ईसाई धर्म पर अपने हमले में पूरी तरह से क्रूर होते हैं। अब, जेफरसन जैसे लोग नहीं थे।

ईसाई धर्म पर अपने हमले में प्रबुद्ध देववादी बर्बर नहीं थे। वे सिर्फ ज्ञानोदय के सिद्धांतों, देववादी सिद्धांतों और इसी तरह के अन्य सिद्धांतों का इस्तेमाल कर रहे थे। कुछ लोग ऐसा कर रहे थे, और इसका एक आदर्श उदाहरण थॉमस पेन है।

और वहाँ वह लिखता है, 1737 से 1809 तक। थॉमस पेन ने तर्क के युग में क्या किया, पुस्तक के शीर्षक पर ध्यान दें, तर्क का युग। तो, यह ईश्वर से रहस्योद्घाटन का युग नहीं है।

यह तर्क का युग है। और थॉमस पेन ने अपनी किताब में जो किया है, वह वास्तव में रूढ़िवादी ईसाई धर्म पर हमला है। वह वास्तव में रूढ़िवादी ईसाई धर्म पर अपने हमले में बहुत ही क्रूरता से हमला कर रहा है।

पुस्तक में, एज ऑफ़ रीज़न में, उन्होंने मूल रूप से कहा है कि इस 18वीं सदी में एकमात्र चीज़ जो काम करने वाली है, वह है देववाद। इसलिए, एज ऑफ़ रीज़न, पुस्तक, देववाद का एक प्रकार

का बचाव है। इसलिए, यह प्राकृतिक तर्क, लोगों के अधिकार, सभी लोगों, राजनीतिक समानता, इत्यादि जैसी चीज़ों का बचाव है।

तो, इस तरह का, फिर से, यह नहीं है, जेफरसन जैसे लोग, मैं जेफरसन को इस तरह का क्रूर हमला करते हुए नहीं देखता, लेकिन मैं थॉमस पेन जैसे किसी व्यक्ति को देखता हूँ, जिनकी पुस्तक बहुत प्रभावशाली थी, रूढ़िवादी ईसाई धर्म पर एक बहुत ही क्रूर हमला करते हुए। और इस राष्ट्र के लिए वकालत करने की कोशिश कर रहा है, प्राकृतिक अधिकारों का समर्थन करने की कोशिश कर रहा है। और आप उन प्राकृतिक अधिकारों को सामान्य ज्ञान, तर्क से, प्राकृतिक दुनिया को देखकर, प्राकृतिक धर्मशास्त्र और सभी प्रकार की चीज़ों से प्राप्त करते हैं, आप जानते हैं, नागरिक स्वतंत्रताएं जो करती हैं।

ठीक है, अब मैं आपको मौका देता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप इस पर सवाल उठाएँ और इस बारे में बात करें, लेकिन मैं आपको ऐसा करने का मौका देता हूँ। मैं बस इतना कहूँगा कि यह तब मानवशास्त्र के माध्यम से धर्मशास्त्र था। हमारे देश में 19वीं सदी और 18वीं सदी में जो विकसित हुआ, वह मानवशास्त्र के माध्यम से धर्मशास्त्र था।

यानी, अपने मानवीय, तर्कसंगत प्रयासों और इसी तरह के अन्य तरीकों से धर्मशास्त्र को समझना। और इसलिए, यहाँ मानव जाति का एक प्रकार का उत्थान हुआ। ठीक है, अब, हम जिस बात पर ध्यान देना चाहते हैं, वह यह है कि यह प्यूरिटन्स के लिए एक सीधा मोड़ है।

तो, प्यूरिटन्स के बारे में सोचें। बोस्टन के बारे में सोचें, जो एक पहाड़ी पर बसा शहर है। प्लायमाउथ के तीर्थयात्रियों के बारे में सोचें।

रोड आइलैंड के रोजर विलियम्स के बारे में सोचें। प्यूरिटन्स के उच्च कैल्विनवाद के बारे में सोचें। उनका धर्मशास्त्र कोई उच्चाटन नहीं था, और यह नृविज्ञान के माध्यम से नहीं था।

उनका धर्मशास्त्र शास्त्रों और मसीह में ईश्वर के रहस्योद्घाटन के माध्यम से था। अब आपके पास जो है वह एक संपूर्ण मोड़ है, एक जबरदस्त मोड़, एक अर्थ में, सार्वजनिक जीवन और धार्मिक जीवन दोनों का एक तरह के नृविज्ञान की ओर। शुरुआती प्यूरिटन के उच्च कैल्विनवाद से दूर, पहले प्यूरिटन अधिक आर्मिनियन धर्मशास्त्र की ओर चले गए, मानव की इच्छा की स्वतंत्रता के धर्मशास्त्र की ओर।

तो, अमेरिकी सार्वजनिक जीवन, दार्शनिक जीवन और धार्मिक जीवन में एक बड़ा बदलाव आया है। यह बहुत बड़ा बदलाव है, क्योंकि तीर्थयात्री 1620 में यहां आए थे। इसलिए, जब यह बदलाव हो रहा है, तब हम 200 साल भी नहीं हुए हैं।

इसलिए, आप आसानी से तीर्थयात्रियों, प्यूरिटन, तीर्थयात्रियों और स्वतंत्रता की घोषणा के निर्माताओं, उदाहरण के लिए, संस्थापक पिताओं के बीच तुलना कर सकते हैं। यह एक तरफ़ उच्च कैल्विनवाद और दूसरी तरफ़ आर्मिनियनवाद और इच्छा की स्वतंत्रता में बढ़ती रुचि के बीच आसान अंतर होगा। तो, यह है।

तो, यहाँ एक पूरी तरह से अलग दुनिया चल रही है, और यह अगली सदी में आएगी। अमेरिकी सार्वजनिक और धार्मिक जीवन में इस देववाद का अंतिम परिणाम क्या है? मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ कि वह क्या है। मैं यहाँ चार या पाँच बातें बताना चाहता हूँ, और फिर मैं इसे कुछ मिनटों के लिए खोलना चाहता हूँ ताकि आप देख सकें कि क्या आप इसके बारे में बात करना चाहते हैं।

लेकिन इसका नतीजा क्या है? अगर मैं सही हूँ, और मैं आपको यह विश्वास दिलाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ कि मैं सही हूँ, मैं यहाँ सिर्फ़ मामला पेश करने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन, अगर मैं सही हूँ, अगर ईश्वरवाद एक ऐसा धार्मिक दृष्टिकोण था जिसने इस पूरे मामले को आगे बढ़ाया। ओह, मेरा मतलब यह भी था, ध्यान दें कि इस सब में रूसो कितना महत्वपूर्ण था।

ये लोग रूसो को पढ़ रहे हैं, और रूसो सरकार के बारे में क्या कहते हैं? बेशक, राजाओं के पास कोई दैवीय अधिकार नहीं है। सरकारें लोगों की इच्छा से बनती हैं। सरकारें, आप जानते हैं, नीचे से नीचे तक नहीं बनती हैं, भले ही मुझे लगता है कि जॉर्ज वाशिंगटन शायद राष्ट्रपति के बजाय राजा बनना चाहते थे।

वैसे, यह मेरी अपनी भावना है, लेकिन मुझे लगता है कि वह वास्तव में राजा बनना चाहता था। लेकिन, सरकारें ऊपर से नीचे तक नहीं बनती हैं। सरकारें लोगों की इच्छा से बनती हैं।

तो, आप देख सकते हैं कि रूसो कितना महत्वपूर्ण था। ठीक है, यह कहने के बाद, अमेरिका में देववाद के कुछ अंतिम परिणाम क्या हैं? मैं उन्हें आपके लिए क्लिक करके बताता हूँ। नंबर एक अंतिम परिणाम प्राकृतिक रहस्योद्घाटन और प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर जोर देना है।

प्राकृतिक धर्मशास्त्र के माध्यम से प्राकृतिक रहस्योद्घाटन पर जोर, अपने आस-पास की दुनिया को देखना और अपने आस-पास की दुनिया में जो कुछ भी आप देखते हैं, उससे कुछ धार्मिक निष्कर्ष निकालना। यह प्यूरिटन द्वारा सिखाए गए विशेष रहस्योद्घाटन से पूरी तरह से अलग है। ईश्वर ने खुद को शास्त्रों और मसीह में, विशेष रूप से मसीह में, विशेष रूप से प्रकट किया है।

यह अलग बात है। तो, यह एक बात है। ठीक है, नंबर दो, इस सबका दूसरा प्रकार का परिणाम ब्रह्मांड के नियम हैं।

भगवान ने ब्रह्मांड के नियम स्थापित किए हैं, लेकिन वह ब्रह्मांड के नियमों में हस्तक्षेप नहीं करता। ब्रह्मांड के नियम यहाँ एक पूर्वकल्पित प्रकार की तर्कसंगतता, एक प्राकृतिक धर्मशास्त्र द्वारा स्वयं ही काम करते हैं। इसी तरह हम ब्रह्मांड के नियमों को समझते हैं।

हम ईश्वर को नहीं समझते, जैसा कि देववादी कहते हैं। हम ईश्वर को किसी भी तरह से ब्रह्मांड में घुसने और उसके द्वारा स्थापित प्राकृतिक कानून में हस्तक्षेप करने के रूप में नहीं समझते हैं। तो, यह नंबर दो है।

ठीक है, नंबर तीन, हम पहले ही बता चुके हैं, लेकिन इसे दोहराना ज़रूरी है। यीशु एक अच्छे नैतिक उदाहरण हैं। इसलिए, यीशु एक अच्छे नैतिक व्यक्ति हैं, एक अच्छे नैतिक उदाहरण हैं, और हमें उनके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए।

हमने दूसरे दिन बताया था कि कैसे सी.एस. लुईस ने इस बात को झूठा साबित कर दिया। आप यीशु को एक अच्छे नैतिक व्यक्ति के रूप में नहीं देख सकते। वह या तो प्रभु हैं या फिर झूठे।

तो, वह एक या दूसरा है, लेकिन आप यीशु के मामले में बीच का रास्ता नहीं अपना सकते। या तो आप उसे प्रभु के रूप में देखते हैं, या फिर उसे झूठा मानते हैं। वह बस विक्षिप्त है।

वह खुद को भगवान कह रहा है। तो, यह नंबर तीन है, ठीक है? नंबर चार, मानवीय तर्क की इस उत्कृष्टता के साथ, तर्क करने की यह क्षमता, यह तर्कसंगत क्षमता जो लोगों के पास है, यहां तक कि वैज्ञानिक साधनों के माध्यम से ब्रह्मांड को नियंत्रित करने की एक तरह से, एक बढ़ता हुआ वैज्ञानिक साधन, आज हमारे पास जैसा कुछ भी नहीं है। इसके साथ, फिर, आपके पास मूल पाप का स्पष्ट खंडन है और यहां तक कि मौलिक रूप से पापपूर्ण कार्यों का खंडन भी है।

ये लोग वास्तव में पाप में विश्वास नहीं करते थे। वे निश्चित रूप से मूल पाप में विश्वास नहीं करते थे। वे निश्चित रूप से किसी विरासत में मिली भ्रष्टता या ऐसी किसी चीज़ में विश्वास नहीं करते थे।

वे वास्तव में पाप कर्मों में इतना विश्वास नहीं करते थे। वे बहुत अच्छे लोग थे, बहुत पुण्यवान लोग थे। हम मानते हैं कि कुछ समस्याएं हैं और ऐसी ही अन्य बातें हैं।

तो, यह वही था जो उसके परिणामस्वरूप आया। और फिर पाँचवीं बात, पाँचवीं बात जो इसके परिणामस्वरूप आई, वह इन लोगों के लिए कर्मों द्वारा मोक्ष की तरह थी। नैतिकता का उत्थान हुआ।

आप जो अच्छे कर्म करते हैं, उससे आप बच जाते हैं। भगवान आपके द्वारा किए गए अच्छे कर्मों पर कृपा करेंगे। तो, यह सब भी इन सबके परिणामस्वरूप हुआ।

ठीक है, तो अमेरिका में हमारे पास क्या है? हमारे पास अमेरिका में एक देववाद है, एक संशोधित देववाद जिसका उदाहरण इस नागरिक सरकार के गठन में मिलता है जिसके तहत हम रहते हैं, और देववाद के धार्मिक जीवन में इसका उदाहरण मिलता है, जो अंततः एकतावाद में विकसित हुआ। ठीक है, यह अमेरिका के लिए मेरा मामला है। हम अमेरिका के लिए इस मामले के साथ क्या करने जा रहे हैं? मैं आपसे इसे खरीदने के लिए नहीं कह रहा हूँ, लेकिन हाँ।

प्यूरिटनवाद से इसके संबंध के संदर्भ में, क्या बहुत से संस्थापक पिता दक्षिणी उपनिवेशों से थे जहाँ प्यूरिटनवाद था? हाँ, यह एक अच्छा सवाल है। संस्थापक पिता विभिन्न धार्मिक परंपराओं से आए थे। उनमें से कुछ में प्यूरिटन परंपराएँ थीं, लेकिन उनमें से कई, कई संस्थापक पिता, वास्तव में ब्रिटिश एंग्लिकन परंपरा से आए थे।

और ब्रिटिश एंग्लिकन परंपरा, जिससे वे आए थे, इंग्लैंड में पहले से ही देववादी, यूनिटेरियन बन रही थी। इसलिए, यह बहुत स्वाभाविक है कि वे अपने साथ इसे लेकर वहां आए। इसलिए, बहुत से, और विशेष रूप से दक्षिण में, क्योंकि दक्षिण में एंग्लिकन चर्च काफी बड़ा था।

तो, यह युद्ध के बाद नहीं था क्योंकि अधिकांश एंग्लिकन घर वापस चले गए क्योंकि वे ब्रिटिश थे, इसलिए उन्होंने राजशाही का समर्थन किया और क्रांति का नहीं। लेकिन उनमें से बहुत से दक्षिण से आए थे, जो देववाद के फूल रहे थे। तो फिर, मेरा मतलब है, इस समय प्यूरिटन कॉलोनियाँ कैसी दिखती थीं? इस समय तक प्यूरिटन कॉलोनियाँ, प्यूरिटन कॉलोनियाँ, याद कीजिए जिस व्याख्यान के बारे में हमने बात की थी, पिछले व्याख्यान में हमने बढ़ते हुए व्यवसायीकरण के बारे में बात की थी जो उन्हें कम इंजीलवादी, कम धार्मिक बना रहा था, या वे कम इंजीलवादी, कम धार्मिक हो गए थे, इसलिए उन्होंने व्यवसायीकरण को बढ़ावा दिया, इस तरह की बात? खैर, अब यह पूरी तरह से खिल रहा है।

अमेरिका में क्रांति के समय, बहुत से मण्डली चर्च यूनिटेरियनवाद की ओर मुड़ रहे थे। इसलिए, वे देववादी थे; वे अभी तक कानूनी अर्थों में यूनिटेरियन नहीं थे क्योंकि, जैसा कि मैंने कहा, पहला चर्च 1785 तक यूनिटेरियन नहीं बना था। लेकिन वे निश्चित रूप से उस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

तो, परिदृश्य पर ऐसा ही लगता है। क्रांति के दौरान, बहुत से लोग जो धार्मिक थे, अब धार्मिक नहीं रहे। क्रांति के दौरान वे काफी संख्या में धर्म से दूर हो गए।

और मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि वे राजनीतिक कारणों में इतने व्यस्त हो गए कि उनके पास धर्म के लिए समय ही नहीं था। इसलिए, क्रांति के समय आपके पास बहुत ज़्यादा राजनीतिक फ़ोकस और कम धार्मिक फ़ोकस है। और फिर यह थॉमस जेफरसन जैसे लोगों के साथ जटिल हो जाता है जो अपनी खुद की बाइबिल बनाते हैं, या यह जॉर्ज वाशिंगटन के साथ जटिल हो जाता है, जो, जहाँ तक हम बता सकते हैं, चर्च में बहुत कम जाते थे।

वह एंग्लिकन थे और जब चर्च जाते थे तो एंग्लिकन चर्च में जाते थे, लेकिन वह ऐसे व्यक्ति नहीं थे जिन्हें आप चर्चमैन कहेंगे, जो वास्तव में चर्च में शामिल थे और चर्च में योगदान देना चाहते थे और इसी तरह के अन्य काम। क्या इससे कोई मदद मिलती है? द लाइट एंड द ग्लोरी नामक एक ऐसी ही किताब है। मैं द लाइट एंड द ग्लोरी से ज़्यादा परिचित हूँ।

लेकिन आगे बढ़ो। ठीक है। ठीक है।

ठीक है। क्या आप इस बारे में मेरी राय पूछ रहे हैं? क्योंकि यह द लाइट एंड द ग्लोरी जैसी किताबों में भी है। इसका कोई सबूत नहीं है।

यही समस्या है। इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है; इसीलिए उसने ऐसा किया। सबूतों से ऐसा लगता है कि वह एक नास्तिक था, वह चमत्कारों में विश्वास नहीं करता था।

ये सभी बातें, बिल्कुल सही, बहस योग्य हैं, इस बारे में कोई संदेह नहीं है। द लाइट एंड द ग्लोरी नामक एक किताब है; कई साल पहले, मैंने इसे पढ़ा था, और यह भी वही बात है। यह एक तरह से, आप जानते हैं, गॉर्डन कॉलेज में रोजर ग्रीन जैसे प्रोफेसरो पर सवाल उठाने जैसा है।

मेरा मतलब है, उन्होंने वास्तव में ऐसा नहीं किया, आप जानते हैं, लेकिन प्रोफेसर जो सिखाते हैं कि ये लोग देववादी थे। इसलिए, उनका मानना है कि वे इंजीलवादी थे और इसी तरह की अन्य बातें। समस्या यह है कि रिकॉर्ड उस तर्क को पुष्ट नहीं करता है।

और फिर, अगर यह सच होता अगर ये लोग इंजीलवादी होते, तो स्वतंत्रता की घोषणा को जिस तरह से पढ़ा जाता है, उससे बिल्कुल अलग तरीके से पढ़ा जाना चाहिए था। इसे स्व-स्पष्ट तर्कों या दार्शनिक तर्कों का सहारा नहीं लेना चाहिए था। हमें इन सत्यों को बाइबल के अनुसार मानना चाहिए, ऐसा कहा जाना चाहिए था।

अब, अगर प्यूरिटन ने स्वतंत्रता की घोषणा लिखी होती, तो प्यूरिटन ने बिल्कुल यही कहा होता। अगर हम 1650 या उसके आसपास क्रांति के लिए लड़े होते, तो प्यूरिटन कहते, हम इन सत्यों को ईश्वर पिता द्वारा बाइबल में प्रकट मानते हैं, कि सभी लोगों को समान बनाया गया है, उन्हें हमारे प्रभु मसीह, हमारे उद्धारक ईश्वर के माध्यम से ईश्वर पिता द्वारा संपन्न किया गया है, कि, आप जानते हैं, ईश्वर ने हमें ये गुण दिए हैं और हमें इन गुणों के अनुसार जीना चाहिए। और हम यह सब बाइबल में देख सकते हैं।

मेरा मतलब है, अगर प्यूरिटन ने घोषणापत्र पढ़ा और लिखा होता, तो यह पूरी तरह से अलग होता। लेकिन इन लोगों की लिखित सामग्री वही देववादी भाषा है जिसका वे उपयोग कर रहे हैं। लेकिन नहीं, मैं आपकी बात से पूरी तरह सहमत हूँ।

और हर कोई इस पर विश्वास नहीं करता। मैं कहूंगा कि गॉर्डन कॉलेज में हर कोई मेरी बात नहीं मानता। लेकिन अच्छी बात यह है कि गॉर्डन में हम अपनी इच्छानुसार पढ़ाने के लिए स्वतंत्र हैं।

लेकिन हम समझते हैं कि इस मुद्दे पर निश्चित रूप से सभी लोग इसे एक ही तरह से नहीं देखते हैं। क्या यह संभव है कि भाषा का इस्तेमाल इसलिए किया गया क्योंकि वे चर्च और राज्य के पृथक्करण में विश्वास करते थे, और वह भाषा चर्च और राज्य के पृथक्करण को पहचानती है? यह सच है, बिल्कुल। सही, सही।

उन्होंने कहानी में रचयिता को बहुत ज़्यादा जगह दी। तो, रचयिता के रूप में भगवान का बहुत ज़्यादा ज़िक्र है। हाँ, यह एक अच्छी बात है।

मैं देखूंगा, हमारे पास पहले से ही ऐसे इंजीलवादी हैं जो चर्च और राज्य के पृथक्करण में विश्वास करते हैं, बैपटिस्ट जो यहां आए थे। वे चर्च और राज्य के पृथक्करण में बहुत मजबूत थे क्योंकि पुरानी दुनिया में राज्य बहुत दमनकारी था। इसलिए, चर्च और राज्य का पृथक्करण एक ऐसा विश्वास था जिसे आकार दिया गया था, जिसका मतलब है कि न केवल आकार दिया गया था, बल्कि इसे देववादियों और बैपटिस्टों द्वारा समान रूप से माना गया था।

तो यह एक ऐसी बात थी जिस पर बहुत से लोगों की राय एक जैसी थी, चाहे उनका धार्मिक दृष्टिकोण कुछ भी हो। इसलिए मुझे लगता है कि वे निश्चित रूप से आम सहमति बनाने की कोशिश कर रहे हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। मुझे लगता है कि वे इसे अपने दृष्टिकोण से कर रहे हैं, मूल रूप से, खासकर हमारे पास मौजूद कथाओं में।

हाँ, आगे बढ़ो। और फिर मूल पाप के संदर्भ में भी, यदि आप फेडरलिस्ट पेपर और अन्य चीजें पढ़ते हैं, तो वे स्पष्ट रूप से मनुष्यों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, कि वे सही चीजें करने में असमर्थ हैं, यही कारण है कि उन्होंने इतने सारे सुरक्षा उपाय लागू किए हैं। यह एक अच्छी बात है।

वे पाप में विश्वास करते हैं। यह सच है। वे मानते हैं कि लोग पटरी से उतर जाते हैं। वे पाप में विश्वास करते हैं क्योंकि वे स्वतंत्र इच्छा में बहुत विश्वास करते हैं। इसलिए, इच्छा की स्वतंत्रता एक बुनियादी धार्मिक घटक है।

और जब तक आपको इच्छा की स्वतंत्रता है, इसका मतलब है कि आप भगवान को ना कह सकते हैं। लेकिन यह एक अच्छी बात है, यह सही है। वे हमारे लिए सुरक्षा उपाय कर रहे हैं क्योंकि उन्हें एहसास है कि हमारे आस-पास ऐसे लोग हैं जो बुरे काम करते हैं।

हाँ, यह अच्छी बात है। लेकिन वे अपनी मर्जी से ऐसा करते हैं। वे ऐसा इसलिए नहीं करते कि उन्हें कोई विरासत में मिली भ्रष्टता या ऐसा कुछ है।

ठीक है, हाँ। क्रांतिकारी युद्ध के बाद तक एपिस्कोपल शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया था। क्रांतिकारी युद्ध के बाद इसका इस्तेमाल इसलिए किया गया क्योंकि अगर हम एंग्लिकन शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो यह वास्तव में ब्रिटिश लगता है, आप जानते हैं, और हम ऐसा नहीं कर सकते।

हमें एपिस्कोपल शब्द का इस्तेमाल करना होगा। आपको वाशिंगटन की बर्फ में घुटने टेककर भगवान से प्रार्थना करते हुए तस्वीर मिलती है। तो, सवाल यह है कि क्या यह उनके जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा था? लेकिन यह एक अच्छी बात है, यह सही है।

मैं इस मामले में जितना संभव हो उतना निष्पक्ष होना चाहता हूँ क्योंकि प्रोफेसरों के लिए किसी ऐसी चीज़ पर बहुत सख्त होना बहुत आसान है जिसके बारे में वे वास्तव में भावुक हैं। और मैं यहाँ ऐसा करने के लिए नहीं हूँ। मैं यहाँ सिर्फ उस दृष्टिकोण को बताने और आपको इसके बारे में सोचने के लिए प्रेरित करने के लिए हूँ।

और मैं यहाँ आपको इस बारे में समझाने के लिए नहीं आया हूँ। जब मैं यह पढ़ता हूँ तो मुझे इस बारे में बहुत सावधान रहना पड़ता है। मैं अमेरिकी ईसाई धर्म का एक कोर्स भी पढ़ता हूँ, इसलिए मुझे उस कोर्स में भी इसे पढ़ाते समय सावधान रहना पड़ता है।

खैर, क्या यहाँ कोई और बात है जिस पर चर्चा की जानी चाहिए? इसमें कोई संदेह नहीं है। मुझे इस पर संदेह है। और जेसन, आपने एक पादरी के साथ काम किया था जो इस बात से परेशान था कि लोग यह सिखा रहे थे कि ये लोग नास्तिक थे।

ऐसा नहीं था। मुझे नहीं लगता कि यह वही बात थी। ठीक है।

यह उनके प्रेस्बिटेरियन चर्च से है, जिसका अमेरिका के ईसाई राष्ट्र होने के बारे में दृढ़ दृष्टिकोण है, जिसका अर्थ है कि उसी की ओर लौटना। ठीक है। ऐसा लगता है कि उन्होंने इसे पढ़ा और डेविड बर्न, लेखक की तरह थे, उनका पूरा उद्देश्य उस ओर लौटने का प्रयास करना है जिस पर हमारा राष्ट्र स्थापित हुआ था।

ठीक है, ठीक है। लेकिन यह दिलचस्प है क्योंकि मैं अभी इसे देख रहा हूँ, और इसलिए जाहिर है, किताब को बहुत सारी नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ मिलीं। बहुत से लोग कह रहे हैं कि यह विश्वसनीय नहीं थी, इसलिए थॉमस नेल्सन ने वास्तव में इसे प्रकाशित करना बंद कर दिया। अब, उन्होंने सभी आलोचकों को 20-पृष्ठ की प्रतिक्रिया प्रकाशित की है।

ठीक है, ठीक है। यह एक बहस है। यह अनिश्चित है।

यह एक बहस है। और यह एक बहस है, और यह उदारवादियों बनाम इंजीलवादियों तक सीमित बहस नहीं है क्योंकि मैं इंजीलवादी हूँ, और इसलिए ऐसे कई इंजीलवादी हैं जो यहाँ जो मैं कह रहा हूँ उसका समर्थन करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है। और बेशक, हमें बस खुद से पूछना है, मेरा मतलब है, यह पूछने लायक है, क्या भगवान व्यवहार करते हैं? मुझे ऐसा लगता है कि पुराने नियम में, उन्होंने एक राष्ट्र, इज़राइल के राष्ट्र के साथ व्यवहार किया।

लेकिन फिर, जब आप शास्त्रों में परमेश्वर के इस रहस्योद्घाटन को देखते हैं, तो क्या आप उसे अब चर्च, मसीह के शरीर, पृथ्वी पर उसके शरीर के साथ व्यवहार करते हुए नहीं देखते हैं, जो मेरे लिए सार्वभौमिक है? यह केवल अमेरिका तक सीमित नहीं है। यह हर उस जगह है जहाँ परमेश्वर का जीवित वचन है।

चर्च है। मसीह का शरीर है। तो, क्या परमेश्वर किसी राष्ट्र के साथ व्यवहार करता है, जैसा कि उसने इस्राएल के साथ किया था, या वह चर्च के साथ व्यवहार करता है, और चर्च सार्वभौमिक है, और चर्च सभी राष्ट्रों में है? मुझे लगता है कि यह पूछने लायक सवाल है।

तो मैं कुछ साल पहले ज़ाम्बिया में था, ज़ाम्बिया में सेवा कर रहा था, और मैं आश्चर्यचकित था। आप जानते हैं, ईसाई राष्ट्र, मैंने इसे हमेशा यहाँ अमेरिका में सुना था, लेकिन मैंने इसे अन्य संदर्भों में कभी नहीं सुना था। और जब मैं वहाँ था, तो ज़ाम्बिया के राष्ट्रपति ज़ाम्बिया के बारे में एक ईसाई राष्ट्र के रूप में प्रचार कर रहे थे, कि ज़ाम्बिया ईश्वर का चुना हुआ राष्ट्र है, और इस दुनिया में ईश्वर का काम करना है और इसी तरह।

बहुत, बहुत दिलचस्प बात यह है कि ज़ाम्बिया के लिए उनके पास ईसाई राष्ट्र जैसी पहचान थी। मेरा मतलब है, मैंने कभी नहीं सुना था कि इसे अन्य देशों पर लागू किया जाता है, लेकिन शायद

आखिरी जगह जहाँ मुझे लगता है कि मैंने इसे सुना होगा वह जाम्बिया होगा। मेरा मतलब है, कौन अनुमान लगाएगा? लेकिन वहाँ यह था।

यहाँ और कुछ भी है? ठीक है, मैं एक मिनट में बंद करने जा रहा हूँ। मुझे बस यह करने दो। मैं आपको बताता हूँ कि हम कहाँ जा रहे हैं, बस आपके पाठ्यक्रम के पृष्ठ 13 से, और फिर हम इसे सोमवार को उठाएँगे।

अब हम अगले व्याख्यान में जो देखने जा रहे हैं, व्याख्यान संख्या 6, चर्च में इंजील पुनरुत्थान, जो हम अब 18वीं सदी, 19वीं सदी में देखने जा रहे हैं, हम पेंडुलम को वापस रूढ़िवादिता, वापस चर्च, वापस ऐतिहासिक ईसाई धर्म, वापस ऐतिहासिक ईसाई धर्म की जड़ों की ओर मुड़ते हुए देखेंगे। तो हमने इस व्याख्यान में जो देखा है, व्याख्यान 5, उन चीजों से दूर जाने की एक चाल है, उन चीजों से दूर जाने की एक तरह की चाल, खास तौर पर पश्चिमी यूरोप में। और अब अगले व्याख्यान में, हम कहने जा रहे हैं कि ऐसे लोग थे जिन्होंने कहा, नहीं, हमें अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा।

और हम तीन बहुत बड़े आंदोलनों पर नज़र डालने जा रहे हैं। हम जर्मनी में धर्म-भक्ति पर नज़र डालने जा रहे हैं। अमेरिका में, हम महान जागृति पर नज़र डालने जा रहे हैं।

और फिर इंग्लैंड में, हम वेस्लेयन पुनरुद्धार को देखने जा रहे हैं। ये चर्च में तीन प्रमुख पुनरुत्थान थे। और इसलिए, यह हमें ले जाता है। यह अगला व्याख्यान काफी लंबा व्याख्यान है क्योंकि पश्चिमी यूरोप और अमेरिका में दुनिया जिस तरह से चल रही थी, उसके लिए इन तीन इंजील प्रतिक्रियाओं को समझने में समय लगता है।

तो यह तो बस परिचय के तौर पर है। समय की कमी के कारण, मैं आज यह व्याख्यान शुरू नहीं करने जा रहा हूँ। हम इसे सोमवार को शुरू करेंगे।

आपका सप्ताहांत बहुत अच्छा रहे। हम आपसे सोमवार को मिलेंगे।